वज्रपात

यदि हो जानकारी व पूर्व तैयारी, तो वज्रपात न बने विनाशकारी।

वज्रपात को सामान्य बोलचाल में बिजली गिरना कहा जाता है और यह सामान्य तौर पर आँधी–तूफान या वर्षा के दौरान आकाशीय विद्युत के प्रवाह से उत्पन्न होती है। मौसम संबंधी संकटों में वज्रपात को सबसे कम आँका जाता है जबकि वास्तव में वज्रपात के आघात से जीवन बचने की संभावना बहुत ही कम होती है। यही नहीं, लकड़ी से बने भवनों, इलैक्ट्रिकल वायरिंग, विद्युत उपकरणों जैसे टेलीविजन, फ्रिज, आदि जैसी संपत्ति को भी वज्रपात से भारी क्षति पहुँचती है।

भारत में वर्ष 2001 के दौरान बिजली गिरने की घटनाओं में 1500 से अधिक लोग मारे गए। पिछले कुछ वर्षों में हिमाचल प्रदेश में वज्रपात से होने वाली जान–माल की क्षति से संबन्धित कुछ घटनाएँ नीचे वर्णित हैं–

2 मार्च, 2007 कांगड़ा

हिमाचल प्रदेश के जसुर स्थित मुख्य टेलीफोन एक्स्चेंज पर बिजली गिरने से कांगड़ा जिले का दूरसंचार तंत्र बुरी तरह से चरमरा गया। बिजली गिरने से टेलीफोन एक्सचेंज में लगे लाखों रुपए के दूरसंचार उपकरण नष्ट हो गए। 24000 टेलीफोन लाइनों में से 15000 निष्क्रिय हो गईं और कांगड़ा जिले के 29 टेलीफोन एक्सचेंजों का संपर्क धर्मशाला स्थित जिला मुख्यालय से कई दिनों तक कटा रहा।

6 मई, 2010 कांगड़ा

धर्मशाला के हिमानी चामुंडा जंगल में बिजली गिरने से एक महिला समेत 120 भेड़ों की मौत हुई।

6 मई, 2010 कुल्लू

कुल्लू जिले में बिजली गिरने से घास चरती 100 से अधिक भेड़ें मारी गईं व कई अन्य घायल हुईं।

15 सितम्बर, 2011 सिरमौर

बिजली गिरने से सिरमौर जिले के नाहन में चार–वर्षीय बालिका की मृत्यु हुई। घटना के समय बालिका ग्राम सरोगा स्थित अपने विद्यालय में थी।

7 जनवरी, 2012 चंबा

आँधी तूफान के दौरान बिजली गिरने से चंबा के निकट बनीखेत में 2 व्यक्तियों की जान गई।

10 जनवरी, 2012 कांगड़ा

पालमपुर उपखंड के सुलह क्षेत्र में एक मोबाइल टावर पर बिजली गिरने से 20 लाख रुपए के विद्युत उपकरण नष्ट हो गए। साथ ही कई घरों में इलैक्ट्रिकल वाइरिंग भी क्षतिग्रस्त हुई।

6 अप्रैल, 2012 चंबा

चंबा के तनोटू गाँव की निवासी एक महिला की मृत्यु बिजली गिरने से हुई।

कांगड़ा में वज्रपातः छायाचित्र– ट्रेव थॉमसन, 17-05-11

हिमाचल प्रदेश में वज्रपात से प्रभावित जिले

कृपया ध्यान दें कि उपरोक्त घटनाओं के अलावा वज्रपात संबंधी कई अन्य दुर्घटनाएँ हर वर्ष राज्य में होती हैं, परंतु इनका कोई ठोस साक्ष्य उपलब्ध नहीं होता।

वज्रपात जानलेवा है– बचाव हेतु पूर्व तैयारी व निम्नलिखित सुझावों का पालन अवश्य करें!

वज्रपात (बिजली गिरने) के विषय पर विशेष ध्यान देना अत्यत आवश्यक है क्योंकि बिजली गिरने से जुड़ी अधिकतर आपद स्थितियों को बहुत ही सुलभ व प्रभावशाली ढंग से टाला जा सकता है। **नीचे दिये गए कुछ सरल पूर्व उपायों का पालन कर आप वज्रपात संबन्धित किसी त्रासदी का शिकार होने से बच सकते हैं–**

क्या करें, क्या न करें?

❖ यदि बाहर हों तो...

- यदि किसी स्थान विशेष पर आँधी–तूफान या वर्षा की भविष्यवाणी की गयी हो तो ऐसे में बाहर के खुले वातावरण में कार्य करना जोखिम भरा हो सकता है। ऐसी स्थिति में कार्य को मौसम के सही होने तक टाल देना ही उचित होता है।
- यदि वज्रपात के दौरान बाहर खुले आकाश के नीचे हों व बादलों की गर्जना सुनें तो ऐसे में आस–पास शरण लेने लायक कोई सुरक्षित स्थान न पाने पर ऊँची वस्तुओं जैसे खंबों, दीवारों, पेड़ों, टावरों, आदि से दूर रहें। संभव हो तो किसी चट्टान की ओट लें।
- अंतिम गर्जना की आवाज सुनाई देने के 30 मिनट से पहले सुरक्षित स्थान से बाहर न निकलें क्योंकि ऐसा करना जोखिम भरा हो सकता है। आँधी–तूफान या वर्षा के दौरान वज्रपात हो सकता है और ऐसे में बाहर कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं है।
- बादलों की गर्जना के साथ आपका बिजली गिरने का आभास हो, तो तुरंत ही जमीन की ओर झुकें व घुटनों व हाथों के सहारे चलते हुए किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने का प्रयास करें। परंतु ऐसी स्थिति में कभी भी जमीन पर लेटने की भूल न करें।

❖ यदि घर / भवन के भीतर हों तो...

- जब वज्रपात होने या आँधी–तूफान के आने की संभावना हो तो सभी विद्युत उपकरणों की तार प्लगों से निकाल लें। टेलीविजन व रेडियो को बाहरी एंटीना से जोड़ने वाली तार को भी निकाल लें।
- जब बादल गरज रहे हों या वज्रपात हो रहा हो तो ऐसे में विद्युत उपकरणों जैसे कंप्यूटर, वीडियो गेम, टेलीफोन व धातु के खंबों, पाइपों, नलों, दरवाजों, खिड़कियों आदि को न छुएँ व इनसे दूर रहें। ये सभी विद्युत सुचालक होते हैं और वज्रपात के दौरान इनमें विद्युत प्रवाह हो सकता है।
- आँधी–तूफान या वज्रपात होने के दौरान पानी से दूर रहें। ऐसी स्थिति में स्नान करना, बर्तन या कपड़े धोना बहुत ही घातक हो सकता है।

❖ वज्रपात का आघात होने पर...

- वज्रपात के चलते तत्काल होने वाली मौतों में से अधिकतर दिल का दौरा पड़ने से होती हैं। अतः सर्वप्रथम वज्रपात के शिकार व्यक्ति के श्वसन व नाड़ी की जाँच करें। यदि व्यक्ति की सांस न चल रही हो तो मुख–से–मुख जोड़कर कृत्रिम रूप से सांस देना बहुत कारगर हो सकता है।
- सदा ध्यान दें कि वज्रपात के शिकार व्यक्तियों में विद्युत आवेश नहीं होता और उन्हें सुरक्षित रूप से प्राथमिक उपचार दिया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति जलने या आघात कि स्थिति में होते हैं, अतः तुरन्त ही चिकित्सीय सहायता मंगवाएँ। 108 नंबर पर फोन कर आपातकालीन सेवा की एम्ब्युलेन्स को बुलवाएँ।

❖ भवन सुरक्षा हेतु

- भवन निर्माण से पूर्व "वज्रपात से भवन सुरक्षा" पर भारतीय मानक ब्यूरो की मानक कार्यप्रणाली नियमावली (कोड) संख्या 2309:1989 का पालन अवश्य करें। इस कोड में वज्रपात से जुड़े सामान्य तकनीकी पहलुओं व तड़ित (आकाशीय बिजली) के वैद्युत, ऊष्मीय व यांत्रिक सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। इस कोड की सहायता से वज्रपात होने के जोखिम का आंकलन तथा किसी भवन आदि संरचना विशेष हेतु आवश्यक वज्रपात सुरक्षा संबंधी उपायों के बारे में निर्णय लेना आसान हो जाता है। इसके अलावा यह कोड बेहतर अभियांत्रिकीय पद्धतियों व उचित सामग्री के चयन के बारे में भी मार्गदर्शन करता है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार – यू०एन०डी०पी० आपदा न्यूनीकरण कार्यक्रम (2009–2012) के अंतर्गत
हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन द्वारा जनहित में जारी

UNDP
Empowered lives.
Resilient nations.

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ, राजस्व विभाग, हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला 171002

टैलीफैक्स: +91 177 2625657, ई–मेल: sdma-hp@nic.in, वेबसाइट: www.hpsdma.nic.in